Sixteenth Loksabha

>

Title: Discussion on the Motion of Thanks on the President Address moved by Shri Hukmdeo Narayan Yadav and seconded by Shri Jagdambika Pal.

HON. SPEAKER: The House will now take up Motion of thanks to the President's Address.

Shri Hukmdeo Narayan Yadav.

14 02½ hrs

At this stage, Shri Idris Ali and some other hon. Members came and stood on the floor near the Table.

-

…(व्यवधान)

श्री हुक्मदेव नारायण यादव (मधुबनी): महोदया, मैं प्रस्ताव करता हूँ :-

"कि राष्ट्रपति की सेवा में निम्नलिखित शब्दों में एक समावेदन प्रस्तुत किया जाए-
'कि इस सत्र में समवेत लोक सभा के सदस्य राष्ट्रपति के उस अभिभाषण के लिए, जो उन्होंने 31 जनवरी, 2019 को एक साथ समवेत संसद की दोनों सभाओं के समक्ष देने की कृपा की है, उनके अत्यंत आभारी हैं।"

महोदया, मैं इस सीट से बोलने की इजाजत चाहता हूँ।…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : हाँ, आप बोलिए।

…(व्यवधान)

श्री हुक्मदेव नारायण यादव : महोदया, मैं प्रार्थना करूँगा कि एकाएक मुझे वायरल अटैक हो गया, जिसके कारण मुझे बोलने में कुछ कठिनाई आ सकती है। अगर मुझे कोई कठिनाई आए, तो मैं थोड़ी देर के लिए बैठकर भी

बोलना चाहूँ तो आप कृपया मुझे इसकी इजाजत दे दीजिएगा।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : हाँ, ठीक है।

...(व्यवधान)

14 04 hrs

At this stage, Shri Muddahanume Gowda and some other Hon. Members came and stood on the floor near the Table.

...(व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर (हमीरपुर): ये बहुत ही सीनियर मेंबर हैं।...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: This is not proper. Please ask her to go back. What is this? सदन की कुछ मर्यादा होती है या नहीं होती है। यह क्या है? क्या सभी मनमर्जी करोगे? एक महिला होकर नहीं समझती हो।

...(व्यवधान)

श्री हुक्मदेव नारायण यादव: अध्यक्ष महोदया, सोलहवीं लोक सभा के अंतिम सत्र में हम खड़े हैं और इस अंतिम सत्र के बाद जब हम सब अपने क्षेत्रों में लौटेंगे तो लोकतांत्रिक महाभारत का समर प्रारम्भ होगा।...(व्यवधान) महाभारत का जो धर्म युद्ध हुआ था, उसमें दो पक्षों में सेनाएं बंटी थीं, उसी तरह इस बार हिन्दुस्तान के इस आम चुनाव में दो तरफ सेनाएं बंट रही हैं।...(व्यवधान) धर्म और अधर्म के बीच सेनाएं बंट रही हैं।...(व्यवधान)

जब राष्ट्रपति जी अपने अभिभाषण को प्रारम्भ करते हैं तो वे इस बात से ही शुरू करते हैं - "मुझे इस बात की खुशी है कि हमारा देश गाँधी जी के सपनों के अनुरूप नैतिकता पर आधारित समावेशी समाज का निर्माण कर रहा है। हमारा देश बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर द्वारा संविधान में दिए गए सामाजिक और आर्थिक न्याय के आदर्शों के साथ आगे बढ़ रहा है। मेरी सरकार के प्रयासों में शोषण की राजनीति के विरुद्ध जन चेतना की मशाल जलाने वाले डॉक्टर राम मनोहर लोहिया के समानता पर आधारित समाज के प्रति आस्था स्पष्ट दिखाई देती है।"...(व्यवधान) प्रारम्भ में ही ऐसा कहा गया कि गाँधी, अम्बेडकर और लोहिया के सपनों को साकार करने का लक्ष्य इस सरकार का है।...(व्यवधान) गाँधी जी की भी यह दृष्टि थी कि समाज में जो सबसे कमजोर है, उसे बजट का अधिक से अधिक हिस्सा जाए।...(व्यवधान)

पंडित जवाहरलाल नेहरू से महात्मा गाँधी ने कहा था कि तुम्हारे बजट की सफलता को मैं इस दृष्टि से देखूंगा कि तुम्हारे बजट की राशि, जो सबसे निर्धन, निर्बल हैं, उनके पास कितनी जा रही है ।...(व्यवधान) अम्बेडकर जी ने यही देखा था कि सामाजिक क्रांति हो और जो समाज में सबसे निर्धन, निर्बल, कमजोर वर्ग के हैं, उन्हें भी समाज में सम्मान के साथ जीने का अधिकार मिले ।...(व्यवधान) डॉक्टर लोहिया ने समानता की बात की थी कि सबमें समानता आए, ऊँच-नीच का भेद न हो, अमीर-गरीब का भेद न हो और सब बराबर हों ।...(व्यवधान) पिछड़े वर्गों के मसीहा के रूप में उन्होंने इस देश में क्रांति की थी ।...(व्यवधान) एक तरफ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और दूसरी तरफ दलितों के उद्धारक अम्बेडकर और तीसरी तरफ पिछड़े वर्गों के मसीहा डॉक्टर राम मनोहर लोहिया को याद करते हुए इस बजट को प्रारम्भ किया गया है ।...(व्यवधान) इसलिए मैं महामहिम राष्ट्रपति जी को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने इन तीन महात्माओं को याद किया है ।...(व्यवधान) उन्होंने लोहिया जी की बात को कहा है तो मैं लोहिया जी की समानता के बारे में कुछ बातें आपके सामने उद्धृत करना चाहता हूं ।...(व्यवधान) लोक सभा में दिनांक 16 मार्च, 1965 को बहस करते हुए डॉक्टर लोहिया ने कहा था कि समाजवाद हर किसी अन्य सिद्धांत की तरह होता है। एक होता है थोक, एक होता है फुटकर, एक होता है सगुण, एक होता है निर्गुण, एक होता है सिद्धांत, एक होता है कार्यक्रम ।...(व्यवधान) समाजवाद से एक सीढ़ी नीचे उतरो, उस सीढ़ी का नाम है बराबरी ।...(व्यवधान) उस बराबरी से एक सीढ़ी नीचे उतरो ।...(व्यवधान) यह महत्वपूर्ण है, जो हिन्दुस्तान के सभी गांव, गरीब, किसान, मजदूरों को समझना चाहिए ।...(व्यवधान) उन्होंने कहा - "आर्थिक बराबरी, सामाजिक बराबरी, राजकीय बराबरी, धार्मिक बराबरी और एक सीढ़ी और नीचे उतरो, तब उसके बाद आएगी समता, सम्पूर्ण समता, सम्भव समता ।"...(व्यवधान) डॉक्टर लोहिया ने, 'आर्थिक बराबरी', 'सामाजिक बराबरी', 'राजकीय बराबरी', 'धार्मिक बराबरी' - इन शब्दों का इस्तेमाल किया था ।...(व्यवधान) डॉक्टर लोहिया तो समाजवादी थे, लेकिन समाजवादी होने के नाते उन्होंने फिर किस 'धार्मिक बराबरी' की बात की थी?...(व्यवधान) देश के अन्दर अगर आर्थिक गैर बराबरी है और उसमें बराबरी लाने के लिए जो कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, वे आर्थिक बराबरी के लिए हैं ।...(व्यवधान) आज आर्थिक दृष्टिकोण से जो गरीब, निर्धन, निर्बल, नीचे है, उसे ऊपर उठाने के लिए सरकार की योजनाएं चलती हैं ।...(व्यवधान) क्या यह 'प्रधान मंत्री जन-धन योजना' निर्धन, निर्बल, गरीबों को ऊपर उठाने के लिए नहीं है?...(व्यवधान) आज हिन्दुस्तान के अन्दर 34 करोड़ जन-धन खाते खोले गए हैं ।...(व्यवधान) उसमें लगभग 84-85 हजार करोड़ रुपये गांव के गरीब, मजदूर किसानों ने जमा किये हैं ।...(व्यवधान) आज गांव की एक गरीब माता है, जिनके पास पाँच-दस रुपये भी नहीं थे, उन्होंने भी बैंक में जीरो बैलेंस पर अपना खाता खोला है ।...(व्यवधान) दुनिया के अंदर बैंक में जितने भी खाते खुले हैं, उनमें से लगभग 55 प्रतिशत खाते केवल हिन्दुस्तान के लोगों ने खोले हैं ।...(व्यवधान)

आज भारत में शोर बढ़ रहा है कि लोग ज्यादा से ज्यादा बचत करें। उस बचत से हिन्दुस्तान का कल्याण हो, हिन्दुस्तान के कोष में पैसा जाए, जिससे गांव, गरीब, किसानों के लिए काम किया जाए।...(व्यवधान) इसी से आर्थिक गैर बराबरी को कम करने तथा मिटाने में सहायता मिलेगी। घर-घर में जो सुलभ शौचालय बनाए जा रहे हैं, वे किसलिए बनाए जा रहे हैं? अमीरों के एक घर में पांच-पांच या सात-सात शौचालय होते हैं और जितना बड़ा उनका बाथरूम होता है, उतना बड़ा उन गरीबों का घर भी नहीं होता है।...(व्यवधान) इसलिए, मैं प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि निर्धन, निर्बल, गरीब, जहां की गरीब माताएँ शौच के लिए कष्ट उठाती रहती थीं, उनके लिए शौचालय बनाया गया है।...(व्यवधान) आज हिन्दुस्तान के अंदर 98 प्रतिशत घरों में जो शौचालय बना है, इनसे किसको लाभ है? एक तरफ आर्थिक गैर बराबरी को मिटाने का काम है, तो दूसरी तरफ सामाजिक गैर बराबरी को भी मिटाने का काम है।...(व्यवधान) इन योजनाओं के कारण हिन्दुस्तान के जो बड़े लोग हैं, संपन्न हैं, समृद्ध हैं, सामंत हैं, उनके कलेजे में आग लगती है। गांव के इन गरीब, दलित, पिछड़े वर्ग की महिलाएं जब शौच के लिए बाहर जाती थी, उसी समय उनके साथ ज्यादा छेड़खानी होती थी।...(व्यवधान) उन बड़े लोगों के मन में इस बात की आग लगी है कि नरेन्द्र मोदी आज हिन्दुस्तान के उन गरीबों के घर में शौचालय बनाकर समृद्ध और सामंत लोगों की बराबरी में उनको खड़ा करना चाह रहे हैं। इससे उनके कलेजे में आग लग रही है।...(व्यवधान)

आज हिन्दुस्तान के अंदर गांव में हमारे गरीब भाई हैं, उनके लिए प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से जो घर बनाए जा रहे हैं, वे किसलिए बनाए जा रहे हैं? हम लोग जिस समय समाजवादी थे, डॉ. लोहिया के आंदोलन में नारा लगाते थे –

'मांग रहा है हिन्दुस्तान

रोटी, कपड़ा और मकान'।

आज नरेन्द्र मोदी जी हर हिन्दुस्तानी को रोटी, कपड़ा तथा मकान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं और उस ओर कदम उठा रहे हैं।...(व्यवधान) वह रोटी भी दे रहे हैं। हिन्दुस्तान के अंदर तब रोटी मिलेगी, जब कृषि की उन्नति होगी। कृषि की उन्नति तब होगी, जब खेत में पानी जाएगा।...(व्यवधान) दीनदयाल उपाध्याय और लोहिया कहते थे – 'हर खेत में पानी हो, हर हाथ को काम हो'। जब खेत में पानी जाएगा तो खेतों में हरियाली आएगी, तब उनके चेहरे पर लाली आएगी, उनके घर में खुशहाली आएगी।...(व्यवधान) प्रधानमंत्री सिंचाई योजना के तहत हर खेत में पानी पहुंचाने का काम शुरू हुआ है, जिससे गांव के निर्धन गरीबों की उन्नति होगी, उनमें खुशहाली आएगी। अध्यक्ष महोदय, यह बड़े लोगों को अच्छा नहीं लग रहा है।...(व्यवधान)

आज हिन्दुस्तान में गांव के अंदर जो किसान हैं, सरकार ने बजट में यह भी घोषणा की है कि हर किसान को, जो लघु सीमांत किसान है, जो पांच एकड़ तक जमीन वाले किसान हैं, सब को साल में छह हजार रुपये दिये जाएंगे ।...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, बहुत से बड़े लोग ऐसे हैं, जो उपहास करते हैं। कोई कहता है कि 17 रुपये रोज मिलेंगे । दिल्ली तथा एनसीआर में बसने वाले किसान जिनके लिए छह हजार रुपये की कोई कीमत नहीं है, ये टी.वी. वाले ऐसे किसानों के मुंह में भोपा लगाकर उनसे पूछते हैं कि छह हजार रुपये से क्या होगा? ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, जो दिल्ली तथा एनसीआर में किसान हैं, उनकी सारी जमीन चली गई है । कारखाने बन गए हैं ।...(व्यवधान) मानेसर के किसान से पूछा गया, मानेसर गांव में मेरी रिश्तेदारी है, वहां किसी के पास खेती की जमीन नहीं है । सभी कारखाने में चले गए, थोड़ी-बहुत जमीन है, उनके लिए छह हजार रुपये की कोई कीमत है क्या? ...(व्यवधान) वे दस-बीस हजार रुपये रोज खर्च करते हैं, लेकिन एक तरफ मैं जिस बिहार से आता हूं, पूर्वी उत्तर प्रदेश के जो लोग हैं, बंगाल या असम के जो लोग हैं, ओडिशा के जो लोग हैं, जो ऐसे गरीब लोग हैं, उन गरीब लोगों के लिए छह हजार रुपये की कीमत काफी है । उनके घर में खुशहाली आ रही है ।...(व्यवधान) जब ऐसे गरीब किसानों से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि छह हजार रुपये हमारे लिए बहुत महत्व रखते हैं। हमारे लिए इसकी कीमत है, हमारे घर में खुशहाली आएगी । ...(व्यवधान) ये छह हजार रुपये जिन गरीब किसानों को मिल रहे हैं, मेरे गांव में किसान हैं, उन सभी के चेहरे पर इस बात से खुशी आई है कि हर आदमी को, सौ प्रतिशत किसानों को उनके खाते में छह हजार रुपये आएंगे ।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, जो ये खातों में पैसे जा रहे हैं, इन खातों में पैसे जाने के कारण बीच में जो बिचौलिये, दलाल हैं, उन दलालों का काम बंद हो गया है । ऐसे जितने दलाल हैं, वे गांव से लेकर दिल्ली तक एक तरफ इकट्ठा होकर नरेन्द्र मोदी के खिलाफ मोर्चा बना रहे हैं कि नरेन्द्र मोदी जब डायरेक्ट ट्रांसफर करेंगे, तो सारा पैसा डायरेक्ट चला जाएगा, तो बीच में दलाली कहां से खाएंगे? ...(व्यवधान) मैं आपसे विनम्र प्रार्थना कर रहा हूं । आज देश के अंदर दो पक्षों में सेनाएं विभक्त हो रही हैं । धर्म-अधर्म का युद्ध होने वाला है । मैं हिंदू, मुसलमान, ईसाई धर्म की बात नहीं करता । धर्म का मतलब है, भारत गरीबी से मुक्त हो, हर घर में खुशहाली हो, हर बच्चे को पढ़ाई हो, हर बीमार को दवाई हो । भारत सरकार ने आयुष्मान योजना के तहत उन गरीबों के लिए पांच लाख रुपये की दवा की जो व्यवस्था की है, उससे 10 लाख लोग आज तक लाभ उठा चुके हैं । ये सारी योजनाएं ऐसी हैं, जो बड़े-बड़े लोगों को अखरती हैं ।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, क्यों ये दोनों तरफ बंट रहे हैं? 3 लाख फर्जी कंपनियों को सरकार ने पकड़ा है, जो पैसे को इधर से उधर करती थीं । इसका पैसा उसको, उसका पैसा इसको । "कहीं का ईंट, कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा"। चोरी का, बेईमानी का, शैतानी का, लूट का पैसा लाते थे और आपस में मिलकर उसको खाते में

डालकर पचाते थे। सरकार ने उसको पकड़ा है।...(व्यवधान) ऐसे जो 3 लाख लोग पकड़े गए हैं, उनके साथ कौन जुड़े थे? पैसे वाले जुड़े थे, धन वाले जुड़े थे, बेईमान जुड़े थे, देश के लुटेरे जुड़े थे, समाज के शोषक जुड़े थे। इन सभी को आज सरकार पकड़ रही है। ऐसे 3 लाख लोग जब पकड़े गए हैं, तो उन सबसे जुड़े हुए हिंदुस्तान के ही अंदर करीब 50-60 लाख लोग बनते हैं, वे सब इकट्ठा हो गए हैं और वे सब हल्ला करते हैं, नरेन्द्र मोदी को हटाओ। ...(व्यवधान) कितनी विडम्बना है कि नरेन्द्र मोदी देश के सारे चोर, बेईमान, लुटेरे, देशद्रोहियों को पकड़ रहे हैं और दूसरी तरफ वे सारे लुटेरे, बेईमान, आतंकवादी, उग्रवादी, ये सब इकट्ठा होकर नारा लगाते हैं - चौकीदार चोर है। मान लीजिए, चोर करे शोर। मेरी विनम्र प्रार्थना है कि उन सबका जो नारा है, वह देश के लोगों को गुमराह करने वाला है।...(व्यवधान) मैं विनम्र प्रार्थना करता हूं कि आज हिंदुस्तान के अंदर आवश्यकता किस बात की है? भूखे को रोटी मिले, बिना कपड़े वाले को वस्त्र मिले, बिना मकान वाले को मकान मिले, गरीब के घर में शौचालय बने। हिंदुस्तान में डॉ. लोहिया ने कहा था कि आर्थिक बराबरी चाहिए, सामाजिक बराबरी चाहिए। सामाजिक बराबरी कब आएगी, जब समाज में ऊंच-नीच का भेद मिटेगा। ...(व्यवधान) ऊंच-नीच का भेद कब मिटेगा, जब नीचे वाले को ऊपर उठाया जाएगा। ...(व्यवधान) नीचे वाले ऊपर उठेंगे, ऊपर वाले थोड़ा नीचे आएंगे, तो बीच में संतुलन कायम करके बराबर किया जाएगा। ...(व्यवधान) नीचे वाले को ऊपर उठाने के लिए ये योजनाएं चल रही हैं। इसलिए मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि ये जो योजनाएं चल रही हैं, इनसे गरीबों के चेहरे पर खुशहाली आ रही है, उनके घर में खुशहाली आ रही है। ...(व्यवधान) उनको क्या पता, जो 100 कोठरी के बंगले में रहते हैं। ...(व्यवधान) उनको बिना मकान वाले का क्या पता? ...(व्यवधान)

प्रधान मंत्री आवास योजना से उनको मकान मिल रहा है। आप उनसे पूछिए और उससे समझ लीजिए।...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदया, देख लीजिए। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : धर्मेंद्र जी, आप सब लोग जाइए।

...(<u>व्यवधान</u>)

माननीय अध्यक्ष : निशिकान्त जी अपनी जगह पर जाइए।

...(<u>व्यवधान</u>)

माननीय अध्यक्ष : धर्मेंद्र जी, मुझसे बात करिए।

...(<u>व्यवधान</u>)

HON. SPEAKER: Dharmendra ji, no, this is not fair.

… (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : अगर कोई शब्द है तो मैं देखूंगी और रिकॉर्ड से निकालूंगी।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अगर कुछ गलत बोला है तो रिकॉर्ड से निकालूंगी।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : धर्मेन्द्र यादव जी, आप अपनी सीट पर जाइए।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप अपनी सीट पर जाइए।

…(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Please go to your seat.

… (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: I am here.

… (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: All of you, please go to your seats.

… (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: I am sorry.

… (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: The House stands adjourned to meet again at 14 30 hours.

14 21 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Thirty Minutes past Fourteen

of the Clock.

14 30 hrs

The Lok Sabha reassembled at Thirty Minutes past Fourteen of the Clock.

(Hon. Speaker *in the Chair*)

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS – Contd.

माननीय अध्यक्ष: प्लीज आप लोग बैठिए। सब लोग थोड़ी शांति रखिए। हुक्मदेव जी, शांति से बोलिए, चिन्ता मत कीजिए।

…(व्यवधान)

14 31 hrs

At this stage, Shri Kalyan Banerjee and some other Hon. Members came and stood on the floor near the Table.

श्री हुक्मदेव नारायण यादव (मधुबनी): माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं विनम्र प्रार्थना करूंगा। मैं 1977 से संसद का सदस्य रहा। आज तक मैंने कभी असंसदीय शब्द का उपयोग नहीं किया है। आज भी मैं यह कह रहा था कि

हिन्दुस्तान के अंदर दो पक्ष की सेनाएं आज चुनाव के मैदान में खड़ी हैं। जैसे कुरुक्षेत्र के मैदान में धर्म और अधर्म के बीच की सेनाएं खड़ी हुई थीं। उस क्रम में मैंने कहा कि एक तरफ हिन्दुस्तान में तीन लाख फर्जी कम्पनी वाले पकड़े गये, 22000 सी.ए. जो पैसा इधर-उधर करते थे, नोट बंदी के समय नोट की चोरी करने वाले पकड़े गये। ऐसे लोग जो पकड़े गये, आज वे इकट्ठा होकर एक जमात बना रहे हैं, आतंकवादी, उग्रवादी जमात बना रहे हैं और प्रधानमंत्री के खिलाफ नारा लगा रहे हैं। जिन्होंने देश को लूटा, जिन्होंने देश को बर्बाद किया और आज प्रधानमंत्री पर आरोप लगा रहे हैं कि 'प्रधानमंत्री चोर' है। मैंने इस सदन के नारे के बारे में किसी को नहीं कहा। माननीय सदस्य हैं, उनकी अपनी मर्यादा है, उनके अपने शिष्टाचार हैं और यदि उनकी मर्यादा और शिष्टाचार यही कहता है तो मैं कौन होता हूं इनको रोकने के लिए? आप अपने-आप को रोकने के लिए स्वयं काफी हैं।

अध्यक्ष महोदया, मैं सामाजिक बराबरी की बात कर रहा था। समाजिक बराबरी का मतलब क्या होता है? सामाजिक बराबरी की बात भगवान श्रीकृष्ण ने की थी। उन्होंने एक मालिन, जो कुबड़ी थी, उसको उठाकर उन्होंने सुन्दर बनाया, उन्होंने सामाजिक बराबरी की बात की थी। एक ऋषि थे, आप जानती होंगी, आपके पास शास्त्र का ज्ञान है। सुपन ऋषि जिनको उस समय के समाज में अछूत कहा जाता था, जब तक युधिष्ठर के राजस्व यज्ञ में सुपन ऋषि को भोजन कराकर पूजित नहीं किया था, तब तक यज्ञ को पूर्ण नहीं माना गया। सामाजिक सम्मान इसी को कहते हैं। आज नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि राष्ट्रीय सम्मान लोगों को दिया गया है। भारत रत्न नानाजी देशमुख को, हजारिका को और आदरणीय प्रणब मुखर्जी को दिया गया है। अध्यक्ष महोदया, मैं विनम्र प्रार्थना करता हूं कि आदरणीय प्रणब मुखर्जी भारत रत्न होकर किसी टी.वी. पर किसी कंपनी का माल बेचने नहीं जाएंगे। आज तो भारत रत्न ऐसे व्यक्ति हैं, जो टी.वी. पर कंपनी का माल बेचते हैं, तेल बेचते हैं, साबुन बेचते हैं। वे लोग उस पद का अपमान करते हैं। इसीलिए, नरेन्द्र मोदी जी ने उचित पात्र, उचित व्यक्ति को सम्मान दिया है। पूजनीय को पूज्य मानने में जो बाधा क्रम है यही मनुज का अहंकार है, यही मनुज का भ्रम है। आज जो लोग इस भ्रम से भ्रमित हैं, उनको अपनी आत्मा से सोचना चाहिए कि किसको पद्मश्री और पद्म भूषण का सम्मान देते हैं।

अध्यक्ष महोदया, एक तरफ गांव में रहने वाले किसान के बेटे, हल चलाने वाले, भैंस चराने वाले का बेटा हुक्मदेव नारायण यादव को अगर पद्म भूषण देते हैं, तो दूसरी तरफ बिहार के नरकटियागंज में राम नगर से झाड़ू लगाने वाली, जमीन पर सोने वाली, सूखी रोटी खाने वाली, अपने बच्चे को गोद में लेकर सोती, उनको पूरे तन पर कपड़ा नहीं दे पाती थी। ऐसी भागीरथी देवी को जो 'पद्म श्री' सम्मान मिला है, वह यह बताता है कि नरेन्द्र मोदी की दृष्टि है कि प्रतिभा, योग्यता और क्षमता जिनके पास हो, अगर झोपड़ी में प्रतिभा है तो उस प्रतिभा की पूजा करेंगे। ...(व्यवधान) लेकिन हमारे पास क्या पूंजी है, साहब? ...(व्यवधान) हमारे पास अपना पसीना और पुरुषार्थ की पूंजी है। ...(व्यवधान) न मेरा बाप राजा था, न मेरी माँ रानी थी, न मेरा नाना राजा था, न मेरी नानी रानी थी,

...(व्यवधान) न मेरा दादा राजा था और न मेरी दादी रानी थी।...(व्यवधान) आज जो लोग राजनीति में हैं, ...(व्यवधान) जो अखबार वाले और टी.वी. -बाइस्कोप वाले दिखाते हैं कि कौन आया है राजनीति में, ...(व्यवधान) जिसके नाना-दादा बड़े लोग थे, वे ऐसे बड़े लोगों के घर से हैं।...(व्यवधान) नरेन्द्र मोदी जी चाहते हैं कि अब तक महल से प्रतिभा की पूजा होती रही है तो आज निर्धन, निर्बल, पिछड़े, दलित और गांव के गरीब के घर में भी अगर प्रतिभा है, योग्यता है, क्षमता है, पसीना है, परिश्रम है तो उनकी भी पूजा की जाए। ...(व्यवधान) अगर गांव के निर्धन, निर्बल, गरीबों की पूजा कर रहे हैं तो क्या अनर्थ-अन्याय कर रहे हैं? ...(व्यवधान) इसलिए मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि तीजनबाई आदिवासी, लोकगीत में महाभारत गाने वाली, को आज अगर 'पद्म विभूषण' दिया गया है तो क्या अनर्थ हुआ है? ...(व्यवधान) उत्तर प्रदेश के वाराणसी से हीरालाल यादव, जो बिरहा लोकगीत गाते हैं, उनको सम्मानित किया गया है। ...(व्यवधान) मैं पूछना चाहता हूं कि इतने दिनों तक हिन्दुस्तान में जिनका राज रहा, उस सरकार के समर्थन में आदरणीय मुलायम सिंह यादव भी रहे, दूसरे लोग भी रहे, क्या कभी उनकी दृष्टि हीरालाल यादव जैसे एक साधारण, गरीब अहीर के ऊपर गई थी? ...(व्यवधान)

आज नरेन्द्र मोदी जी एक लोकगीत गाने वाले को ऊपर उठा रहे हैं। ...(व्यवधान) डाक्टर लोहिया ने कहा था कि लोक-भूषा, लोक-भाषा, लोक-भोजन, लोकभवन, लोक-संस्कृति, लोक-कला आदि को जब पूजा जाएगा, तब असली लोकतंत्र आएगा। ...(व्यवधान) नरेन्द्र मोदी जी लोक- संस्कृति को भी पूज रहे हैं और लोकगीत गायक हीरालाल यादव, जो बिरहा गाने वाले हैं, पूर्वी उत्तर प्रदेश में जिन लोगों ने बिरहा सुना होगा, उनको कितना आनन्द आता है, वे ही जानेंगे। ...(व्यवधान) तीजनबाई वहां आदिवासियों के बीच से निकलकर, आज वहां महाभारत गाती हैं, उसका आनन्द उस समाज को मिलता होगा। ...(व्यवधान)

"का दुख जाने दुखिया, का दुख जाने दुखिया माय,

जाके पैर न फटे बिवाई, सो का जाने पीर पराई।"

महलों में रहने वाले ये लोग हमारी पीड़ा को क्या जानेंगे? ...(व्यवधान) मेरी मां को क्या कष्ट हुआ होगा, उसे क्या जानेंगे? ...(व्यवधान) नरेन्द्र मोदी इसलिए जानते है कि उन्होंने एक मजदूर-गरीब मां के पेट से जन्म लिया, पिछड़े समाज में जन्म लिया। ...(व्यवधान) मैं भारतीय जनता पार्टी के सभी लोगों को कोटि-कोटि अभिनन्दन करते हुए धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने नरेन्द्र मोदी जैसे पिछड़े वर्ग में जन्म लेने वाले, गरीब मां के बेटे को नेता बनाकर एक नम्बर की कुर्सी पर सम्मानित किया है। पहले ऐसा क्यों नहीं हुआ? ...(व्यवधान) पहले क्यों नहीं हुआ? ...(व्यवधान) आपने कहा हमको बुलाओ, नाना प्रकार के लोभ दिखाओ, हम फूल लेकर आएंगे, तेरे गले में माला पहनाएंगे। हम पीछे-पीछे रह जाएंगे, तेरे जूते-चप्पल साफ करते रहेंगे, तू कुर्सी पर बैठेगा और सिंहासन पर मुकुट पहनकर राज चलाएगा। ...(व्यवधान) अब नरेन्द्र मोदी के राज में जमाना बदला है। ...(व्यवधान) इसीलिए

मैं इस सदन में खड़ा होकर, हिन्दुस्तान के करोड़ों गरीब, निर्धन, निर्बल, पिछड़े और दलित लोगों से प्रार्थना करना चाहता हूं। आज लोक सभा टी.वी. पर वे मेरी बात सुन रहे होंगे, सुनो-सुनो, यह जंग है। ...(व्यवधान) यह जंग है, यह झगड़ा महाभारत का है, एक तरफ झोपड़ी और एक तरफ महल है। ...(व्यवधान) यह झोपड़ी और महल की टक्कर है। ...(व्यवधान) एक तरफ लुटेरा है और एक तरफ नरेन्द्र मोदी फक्कड़ है। ...(व्यवधान) इसलिए दो पंक्तियों में बंट जाओ, सीधी लड़ाई होने दो। ...(व्यवधान) मैं बड़े लोगों को सावधान करना चाहता हूं, महाभारत में श्रीकृष्ण ने कुरु सभा में जाकर सबको सावधान किया था, महाभारत में सबको गीता का संदेश सुनाया था। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, आज राजनीति में ऐसे नेता हैं, जिन्होंने न गीता का श्लोक पढ़ा, न गीता के ज्ञान का पता, न गीता के मर्म को समझा, लेकिन बाहर वह अखबार और टी.वी. के मार्फत श्री नरेन्द्र मोदी को गीता पढ़ने का उपदेश देते हैं।...(व्यवधान) नरेन्द्र मोदी जी गीता क्या पढ़ेंगे, बीस साल-पच्चीस साल तक वह संघ के प्रचारक की हैसियत से भटके। वह जंगल में भटके, आदिवासियों, गरीबों, निर्बलों और निर्धनों के बीच भटके। उन्होंने गीता का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया है। ...(व्यवधान) जिसके पास ज्ञान नहीं, बुद्धि नहीं, विवेक नहीं है। वे उपदेश दे रहे हैं।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, मैं एक और बात कहना चाहूंगा, मैं हिन्दुस्तान के इन गरीबों से कहना चाहता हूं, तुम अपने जाति के नेता के पीछे बहुत दौड़े हो। तुम्हारे जाति के नेता आए, तुमको भटकाए, जाति के नाम पर साथ लिए, खुद किले पर चढ़ गए।...(व्यवधान) उन्होंने कहा :

जाति के लोग आओ,

मेरे पीछे लग जाओ,

अपने बेटे को मरवाओ,

मैं तेरे बेटे की लाश पर चढ़ूंगा,

लाल किला पर झंडा लहराऊंगा।

वह जमाना चला गया।...(व्यवधान) इसलिए मैं उन गरीबों के बच्चों से कहना चाहता हूं, पिछड़े दलितों से कहना चाहता हूं कि तुम अपनी जाति के नेता के पीछे दौड़ना छोड़ो। उनके मोह को छोड़ो, उनकी ममता को छोड़ो और एक बार जाति तोड़ो, बंधन छोड़ो, गले लगो और हाथ में हाथ मिलाओ। सब मिल कर गाओ, "न हम हिन्दू, न

मुसलमान, हम हैं भारत माता की संतान ।" सब मिल कर आएंगे, कमल पर मुहर लगाएंगे, फिर नरेन्द्र मोदी को हिन्दुस्तान के लाल किला पर चढ़ाएंगे । जिस दिन यह सपना पूरा होगा, हिन्दुस्तान का कायाकल्प होगा ।... (व्यवधान)

अंत में, मैं हिन्दुस्तान के किसान, पिछड़े और दलितों से प्रार्थना करना चाहता हूं कि मेरी बात को समझो । मैं राजनीति के 58 वर्ष तक केवल इन गरीबों, पिछड़ों और दलितों के लिए लड़ा । अध्यक्ष महोदया, मैं पीड़ित हूं । मैं ऊंची जातियों के अनादर और अपमान से कभी पीड़ित नहीं हुआ । अगर मुझे कभी पीड़ित होना पड़ा तो अपनी जाति के लोगों से पीड़ित होना पड़ा ।

वर्ष 1991 में, मैं चन्द्रशेखर जी के नेतृत्व में दरभंगा से लोक सभा का चुनाव लड़ रहा था ।... (व्यवधान) उस समय मैं भारत सरकार का मंत्री था । उस समय उग्रवादी, आतंकवादी, जातिवादी और उदंडवादी, वे मेरी जाति के ही लोग थे, एक नेता के पीछे पागल थे ।...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदया जी, उन्होंने पंपिंग सेट में से निकाल कर जला हुआ एक बाल्टी मोबिल डाल दिया, मिट्टी तेल डाल दिया और मेरी देह में आग लगाने लगे । वहां के लोगों ने आकर मुझे बचाया ।...(व्यवधान) इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि आओ गरीबों, जाति से नाता तोड़ो, मोह को छोड़ो, तुम एक साथ इकट्ठा हो जाओ । यह एक लड़ाई है, यह महाभारत का युद्ध है, एक तरफ गरीब-एक तरफ अमीर, एक तरफ कमेड़ा-एक तरफ लुटेरा, एक तरफ महल-एक तरफ झोपड़ी है ।... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, निर्बल से लड़ाई बलवान की, यह कहानी है दिये और तूफान की । एक तरफ निर्बल, निर्धन लोग खड़े हैं ।...(व्यवधान)

अंत में, मैं यह प्रार्थना करूंगा कि समाज को समरस करने के लिए, ऊंची जाति के लोगों को दस प्रतिशत आरक्षण दिया गया । डॉ. लोहिया कहते थे कि जिस दिन ऊंची जाति के गरीब, अपनी जाति के धनवान और अमीर से नाता तोड़ कर, पिछड़े, दलित और गरीबों से अपना नाता जोड़ लेंगे, उस दिन असली हिन्दुस्तान का निर्माण होगा ।...(व्यवधान) मुझे खुशी है कि हम उस ओर कदम बढ़ा रहे हैं ।...(व्यवधान) ऊंची जाति के गरीब लोगों का भी अपनी जाति के सामंतवादी, अपनी जाति के बड़े लोगों से, भ्रष्टाचारियों से नाता टूटेगा और फिर वे आगे आकर इन गरीबों, दलितों, पिछड़े लोगों का नेतृत्व करेंगे ।...(व्यवधान)

मैं अपनी वाणी को विराम देते हुए, डा. लोहिया की उस वाणी से आह्वान करता हूं ।...(व्यवधान) वह हमेशा कहते थे कि ऊंची जाति के नौजवानों में नेतृत्व देने की क्षमता है, उनमें आगे बढ़ने की क्षमता है ।...(व्यवधान) तुम अपने अमीरों से नाता तोड़ो, आगे आओ और समाज के इन पिछड़े और दलितों का नेतृत्व करो, नए भारत का

निर्माण करो। तुम खाद बन जाओ, लेकिन इनको गुलाब की तरह खिलने दो, नरेन्द्र मोदी जी उस ओर जा रहे हैं। ...(व्यवधान)

मैं आखिर में कहूंगा कि बेईमान और शैतान की बेनामी संपत्ति जब्त हो रही है।...(व्यवधान) मैं एक शब्द सुना देता हूं।...(व्यवधान) वर्ष 1960 में 'कंचन-मुक्ति' पर प्रवचन देते हुए साथियों के बीच लोहिया ने कहा था। इसे सब गौर से सुनिएगा। दुनिया के नौजवानों सुनो, गरीबों सुनो, अपराधियों के लिए उचित दंड की व्यवस्था रहनी चाहिए और विशेष रूप से अवैधानिक संपत्तियों को छीन लेने की, किन्तु ऐसे कानून बनाने से पहले यह आवश्यक है कि उसके समर्थन में शक्तिशाली जनमत तैयार हो। डा. लोहिया ने वर्ष 1960 में जिसको कहा था, आज नरेन्द्र मोदी जी बेनामी संपत्ति जब्त कर रहे हैं।...(व्यवधान) वह इसलिए कर रहे हैं कि विशाल जनमत उनके साथ है।...(व्यवधान) मैं उन गरीबों, मजदूरों, किसानों, पिछड़ों, दलितों और गरीब माताओं को कहता हूं, मेरी बात सुनो, हे गरीब मां, जिसने तुम्हारे कोख की लाज रखी है, तुम्हारे दूध की पूजा की है, आज आवश्यकता है कि तेरे कोख की जितनी संताने हैं, उन सभी से कहो कि उठो, जागो। इस युद्ध में गरीब एक तरफ हो कर नरेन्द्र मोदी जी के साथ खड़े हो जाओ और हिन्दुस्तान में एक बार आर-पार की लड़ाई होने दो। फिर देखेंगे कि किसके सीने में कितनी ताकत है?...(व्यवधान) हम वर्ष 2019 के चुनाव में हर मतदान केन्द्र पर लड़ लेंगे और फिर अपनी विजय पताका फहराएंगे। धन्यवाद।

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज) : अध्यक्ष महोदया, आपने महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर श्री हुक्मदेव नारायण यादव जी द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के समर्थन पर मुझे बोलने की अनुमति दी है, इसके लिए आपका आभार व्यक्त करता हूं। श्री यादव जी ने बहुत विस्तार से महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में सरकार की उपलब्धियों की चर्चा की। जब मोदी जी वर्ष 2014 में देश के प्रधान मंत्री बने और संसद की दहलीज पर, लोकतंत्र के मंदिर की चौखट पर पहली बार उन्होंने प्रवेश किया, तब अपना शीश नवाते हुए कहा था कि मेरी सरकार देश के उन करोड़ों लोगों के लिए समर्पित होगी, जो आजादी के इतने वर्षों बाद भी वंचित रहे हैं, उपेक्षित रहे हैं। उन आर्थिक विषमताओं को दूर करने के लिए, उन विसंगतियों को दूर करने के लिए उन्होंने संकल्प लिया कि हमारी सरकार "सबका साथ सबका विकास" करेगी। एक वह दिन था और एक आज का दिन है, जब हम 17वीं लोक सभा के चुनाव के पास हैं और यह हमारा आखिरी सत्र है। मैं कहना चाहता हूं कि आज हम केवल राष्ट्रपति जी के

अभिभाषण पर ही चर्चा नहीं कर रहे हैं, बल्कि हमारी सरकार के पिछले साढ़े चार वर्षों की उपलब्धियों के बारे में चर्चा कर रहे हैं। यह हमारी सरकार के साढ़े चार साल का लेखा-जोखा है।

महोदया, आज संसद में सरकार के कार्यक्रमों और नीतियों पर चर्चा होनी चाहिए। यदि कोई कमी है, तो उसे उल्लेखित करना चाहिए। जिस तरह से सदन में लगातार व्यवधान पैदा किया जा रहा है, वह ठीक बात नहीं है। लोकतंत्र में देश की जनता इन्हें माफ नहीं करेगी, क्योंकि देश के सर्वोच्च न्यायालय ने, जिस बात को लेकर इनकी नेत्री ने धरना दिया, उसके लिए सुप्रीम कोर्ट ने अपने ओबजर्वेशन में स्पष्ट किया कि वेस्ट बंगाल के पुलिस कमिश्नर को जो कि शारदा, नारदा घोटाले में, जिसमें 17 लाख लोगों की गाढ़ी कमाई का पैसा डूब गया है और कई लोग आत्महत्या तक करने को मजबूर हुए, उन परिवारों के लोगों का सुहाग उजड़ चुका, तमाम परिवारों की माताओं की गोद सूनी हो गई, ऐसे गरीब लोग अपने पैसे और न्याय की आशा लिए हुए थे। इस संबंध में वर्ष 2014 में एसआईटी का गठन हुआ। कोर्ट के आदेश पर सीबीआई की जांच शुरू हुई और इसके बावजूद इस संघीय ढांचे में सीबीआई की जांच, जो सम्मानित सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर हो रही है, उस जांच के लिए पूछताछ करने के लिए सीबीआई के अधिकारी गए। उन अधिकारियों को हिरासत में ले लिया गया। गृह मंत्री जी ने स्वयं कहा कि लोकतंत्र के संघीय ढांचे पर खतरे का सवाल है। आज सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट कर दिया कि सीबीआई को सहयोग करना होगा, पुलिस कमिश्नर को उनके सामने पेश होना होगा। इसके बावजूद भी यदि सदन में इस विषय पर शोर किया जा रहा है, तो इन्हें देश की जनता से माफी मांगनी चाहिए।

कांग्रेस के नेता राफेल के सवाल को उठाते रहे, जैसे गोयबल्स की थ्योरी हो कि लगातार झूठ बोलते रहें और उस पर भी सुप्रीम कोर्ट ने जिस तरह से सरकार को क्लीनचिट दी और फ्रांस के राष्ट्रपति ने भी दी, लेकिन आज भी उसी बात को इश्यू बना रहे हैं। यह शायद पहला अवसर होगा, जब इस सदन में विपक्ष के पास आज कुछ कहने के लिए नहीं है। आप याद कीजिए वर्ष 2014 के समय देश का वातावरण क्या था। पूरे देश में उस समय भ्रष्टाचार था। उस समय देश में कोलगेट घोटाले की बात हो या कॉमन वेल्थ गेम्स के भ्रष्टाचार की बात हो या 2जी घोटाले की बात हो, जिस तरह से 1 लाख 86 हजार करोड़ रुपये के घोटाले थे, उसी को ध्यान में रखकर देश की जनता ने जनादेश दिया था।

आज वेस्ट बंगाल में भ्रष्टाचार की बात हो, अपने भ्रष्टाचार को छिपाने के लिए ये इस सदन के माननीय सदस्यों का बहुमूल्य समय खराब कर रहे हैं। आखिर उस सरकार की नीतियाँ क्या हैं? इस देश में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि से देश के 12 करोड़ किसानों के खाते में छ: हजार रुपये प्रतिवर्ष जाएंगे, जिसमें लगभग 75 हजार करोड़ रुपये भारत सरकार के खजाने से उन 12 करोड़ किसानों के खाते में सीधे जाएंगे।

मैं कहना चाहता हूँ कि 17 रुपये प्रतिदिन के बारे में एक नेता ने कहा कि यह किसानों का अपमान है। पिछले 10 वर्षों में जब उनकी सरकार थी, इसी सदन में माननीय सदस्य भर्तृहरि महताब जी बैठे हैं और 15वीं लोक सभा के तमाम सम्मानित सदस्यगण भी हमारी तरफ बैठे हैं। जब इस सदन में चर्चा होती थी, माननीय स्पीकर महोदया आप भी इस सदन की गवाह हैं, यह होता था कि श्री मोंटेक सिंह अहलूवालिया जो नौ वर्षों तक योजना आयोग के उपाध्यक्ष रहे, वे क्या परिभाषा देते थे? वे कहते थे कि गरीबी रेखा के नीचे जो लोग हैं, तो शहरी क्षेत्र में गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोगों की आमदनी अगर 859 रुपये 60 पैसे प्रति माह है, तो वे गरीब नहीं हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोगों की आमदनी अगर 672 रुपये प्रति माह है, तो वे गरीब नहीं हैं। यह परिभाषा कांग्रेस-यूपीए की सरकार के योजना आयोग के उपाध्यक्ष की थी कि 28 रुपये 65 पैसे प्रतिदिन और 22 रुपये 42 पैसे प्रतिदिन कमाने वाला गरीब नहीं है। ये आँकड़े इसलिए दिये जाते थे, क्योंकि उनका मकसद गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले गरीबों की संख्या को कम करना था, जिससे गरीबों को योजनाओं का लाभ न मिल सके, उनको अधिक-से-अधिक लाभ न देना पड़े।

आज हमारी वर्तमान सरकार की योजना यह है कि देश के एक-एक गरीब को, अगर आज सौभाग्य योजना में हमारी सरकार ने लाभ देने का फैसला किया है, तो हम गरीबी रेखा की परिभाषा को निर्धारित नहीं कर रहे हैं। आज हम यह निर्धारित नहीं कर रहे हैं कि कोई गरीबी रेखा के नीचे होगा, उन्हीं को नि:शुल्क बिजली का कनेक्शन देंगे। हमारी सरकार ने फैसला किया है कि चाहे कोई गरीबी रेखा के नीचे का हो, चाहे गरीबी रेखा के ऊपर का हो, आज भी देश में कन्याकुमारी से कश्मीर तक गाँवों और शहरों में लोगों के ऐसे घर हैं, जहाँ आज भी बिजली मुहैया नहीं हुई है। आज भी उनके बच्चे सूरज निकलने का इंतजार करते हैं कि जब सूरज की रोशनी होगी, तब हम पढ़ाई करेंगे। यदि माँ को घर में खाना बनाने के लिए ढिबरी या लालटेन हो, यदि उनको उस युग से निकालने का दर्द किसी को हो सकता है, तो वह उसी को हो सकता है, जिसने देश में गरीबी देखी हो, जिसने गरीबी भोगी हो और आज हम कह सकते हैं कि भारत के प्रधानमंत्री को देश के गरीबों की चिन्ता है क्योंकि उन्होंने उस गरीबी को देखा है। इसलिए देश का कोई भी ऐसा घर, जहाँ आज भी उजाला नहीं है, उन घरों में हम सौभाग्य योजना के तहत नि:शुल्क बिजली का कनेक्शन देने का काम कर रहे हैं।

मैं कहता हूँ कि उन घरों में हम सौभाग्य योजना में बिजली का कनेक्शन दें। घरों में धुएँ से मुक्त रसोई देने का काम कर रहे हैं, इसके लिए इसी सदन में बहुत चिन्ता होती थी। मैं 15वीं लोक सभा में इस सदन में खड़ा था, सरकार ने कहा था कि अब हम केवल साल में छ: गैस के सिलेंडर ही एक परिवार को देंगे। आप कल्पना कीजिए, हर परिवार में औसतन एक सिलेंडर लगता है। इस सदन में हमने इस सवाल को उठाया था कि कम-से-कम गैस के 12 सिलेंडर एक परिवार को मिलने चाहिए। उसका नतीजा यह हुआ कि बड़ी मुश्किल से पूरे सदन ने मेरी बात का

समर्थन किया था। आदरणीय गृह मंत्री जी यहाँ मौजूद हैं। उस समय नौ सिलेंडर किए गये थे। उस कांग्रेस-यूपीए की सरकार के समय में लोगों को ब्लैक में सिलेंडर लेना पड़ता था। लोग पैसे लेकर सिलेंडर लेने जाते थे, तो लाठी चार्ज होती थी। आज यह नतीजा है कि हम केवल छः, नौ और बारह सिलेंडर ही नहीं दे रहे हैं, बल्कि देश के हर घर में, पहले हमने वर्ष 2011 की सूची से तय किया कि देश में जो अनुसूचित जाति के लोग हैं, अनुसूचित जनजाति के लोग हैं, अन्त्योदय कार्ड होल्डर्स हैं, चाहे देश में गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले लोग हों या जंगलों में रहने वाले आदिवासी हों, उनके घरों में हम गैस के चूल्हे देंगे।

आज मैं अपनी सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि आज हमारी सरकार ने यह फैसला किया। माननीय प्रधानमंत्री जी और पेट्रोलियम मिनिस्टर प्रधान जी ने फैसला किया कि चाहे कोई सामान्य वर्ग का हो, सवर्ण हो, बैकवर्ड क्लास का हो, अगर आज भी देश का कोई ऐसा घर है, जहाँ गैस के चूल्हे का कनेक्शन नहीं है, उसको 'उज्ज्वला योजना' के अंतर्गत मुफ्त गैस का चूल्हा, सिलेंडर और रेगुलेटर देने का काम करेंगे। शायद इस तरीके का निर्णय आजादी के बाद से किसी सरकार के द्वारा नहीं हो सकता था। लोगों को पैसा देकर भी गैस का सिलेण्डर नहीं मिल रहा था। आज स्थिति यह है कि 6 करोड़ गैस सिलेण्डर और चूल्हा हम बांट चुके हैं।

अध्यक्ष महोदया, मैं कहना चाहता हूं कि वर्ष 2014 में जहां भ्रष्टाचार की चर्चा होती थी, आज वर्ष 2019 में 'आयुष्मान भारत' की चर्चा हो रही है, सौभाग्य योजना, उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि और प्रधानमंत्री मुद्रा योजना की चर्चा हो रही है। ये योजनाएं क्या हैं? प्रधानमंत्री जी ने 26 मई, 2014 को सरकार बनने के बाद कहा था कि सबका साथ, सबका विकास होगा। हमारे देश के करोड़ों उपेक्षित लोग, जिन्होंने कल्पना नहीं की थी कि उनके घर में शौचालय बनेगा, उनको रहने के लिए आवास मिलेगा, उन लोगों के लिए यह सरकार काम कर रही है।

मैं एक बात कहना चाहता हूं कि महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती मनायी जा रही है। भारतीय जनता पार्टी और हमारी सरकार महात्मा गांधी जी के प्रति सम्मान प्रदर्शित करती है। सदन के किसी भी दल के लोग हों, जब भी सरकार बनती है तो वे कहते हैं कि हम महात्मा गांधी जी के पदचिह्नों पर चलेंगे, महात्मा गांधी जी की नीतियों पर चलेंगे और महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर चलेंगे। मैं कहना चाहता हूं कि महात्मा गांधी के सबसे बड़े दो सिद्धांत थे। पहला अस्पृश्यता के विरुद्ध था और दूसरा, स्वच्छता का था। आजादी के बाद से 2 अक्टूबर को राजघाट जाकर पिछली सरकारों के मुखिया प्रधानमंत्री या मंत्री श्रद्धा सुमन अर्पित करते थे और संकल्प लेते थे कि हम आपके सपनों को साकार करेंगे। अगर वे सपने साकार हुए होते तो वर्ष 2014 में जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी तो मोदी जी के नेतृत्व में उन महात्मा गांधी जी के सपनों को हमारी सरकार के द्वारा साकार किया जा रहा है। देश के 9 करोड़ परिवारों को शौचालय उपलब्ध करवाए गए हैं। हमारी बहन-बेटियों को पहले शौच जाने के

लिए सूरज ढलने का इंतजार करना पड़ता था। अगर तबियत खराब हो जाए तो बहुत असहज स्थिति होती थी। पहले ऐसी परिस्थितियां हुआ करती थीं। हमने देश के नौ करोड़ परिवारों के लिए शौचालय बनाकर दिए हैं। महात्मा गांधी के सपनों को कोई साकार कर रहा है, महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर चलकर सबका साथ, सबका विकास की बात हम कर रहे हैं। छुआछूत, गैर बराबरी, असमानता, जिनके बारे में हमारे हुकुमदेव नारायण जी ने कहा, जो विसंगतियां हैं, उनको समाप्त करके हम आज समतामूलक समाज की स्थापना करने की बात कर रहे हैं। यह काम नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारी सरकार कर रही है।

महोदया, मैं एक बात कहना चाहता हूं कि हमने जिस तरह से देश में योजनाओं को लागू किया है, हमारी सरकार बनते ही हमने सबसे पहले कृषि पर जोर दिया। हमारे सांसद जब अपने लोक सभा क्षेत्र में जाते हैं और कोई विधवा मिल जाती है तो कहती है कि मेरे पति की मृत्यु को आठ साल हो गए हैं, लेकिन अभी तक हमें विधवा पेंशन नहीं मिली है। कोई वृद्ध मिल जाता है तो कहता है कि हमें वृद्धावस्था पेंशन नहीं मिल रही है। 500 रुपये पेंशन के लिए हमारी गांव की माताएं और बहनें जिस तरह से दुखी और व्यथित रहती हैं, उनको जब पेंशन मिल जाती है तो उनके जीवन की कितनी बड़ी सोशल सिक्योरिटी होती है। जिस तरह से किसी नौकरीपेशा को सुरक्षा मिलती है, उसी तरह की यह होती है। आदरणीय मोदी जी के नेतृत्व में हमारी सरकार ने सबसे पहले किसानों की बात की। किसानों की बात सब करते हैं। देश की आजादी के बाद से खेती का जीडीपी में योगदान निरंतर घट रहा था।

15 00 hrs

यह चिंता हमसे पहले की भी सरकारों को होनी चाहिए थी। लेकिन इसके बावजूद यह चिंता नहीं हुई कि उस जीडीपी में जब किसानों का 27 प्रतिशत कान्ट्रिब्यूशन रह गया, तो किसानों के उत्पादन मूल्य को कैसे लाभप्रद मूल्य में बदल सकें। यह बात पहली बार माननीय प्रधान मंत्री जी ने सोची कि अब हम उन किसानों का जो मिनिमम सपोर्ट प्राइस होगा, न्यूनतम समर्थन मूल्य होगा, किसान की जो लागत आती है, उसकी भर्ती आती है, चाहे वह बीज हो, खाद हो, पानी हो, कीटनाशक पेस्टिसाइड दवाइयां हों, उन सबको मिलाकर जो उनकी उत्पादन मूल्य/लागत मूल्य है, उस उत्पादन मूल्य का डेढ़ गुना देने का काम करेंगे। मैं आज बधाई देना चाहता हूं कि पहली बार देश के किसानों की 22 महत्वपूर्ण फसलों के मिनिमम सपोर्ट प्राइस पर हमारी सरकार ने कैबिनेट में फैसला किया कि हम डेढ़ गुना लागत देंगे। जिस किसान को कभी अपना लाभप्रद मूल्य नहीं मिलता था।...(व्यवधान) उसकी खरीद नहीं होती थी।... (व्यवधान) जिस तरीके से से गेहूं की खरीद हुई, धान की खरीद हुई...(व्यवधान) अभी जो लोग सदन में हुक्मदेव नारायण जी का विरोध कर रहे थे, वे भी पांच साल सरकारों में थे। गन्ना मूल्य का भुगतान नहीं कर पाते थे।...(व्यवधान) आप क्या बात कर रहे हैं?...(व्यवधान) आप कभी गेहूं की खरीद

नहीं कर पाए।...(व्यवधान) आज मैं कह सकता हूं...(व्यवधान) इसीलिए जनता ने जनादेश दे दिया कि केवल कहने के लिए कहते थे कि हम किसान के पुत्र हैं...(व्यवधान) लेकिन किसानों के पुत्र नहीं थे, केवल अपने यहां के एक्सप्रेस हाईवे बना रहे थे।...(व्यवधान) आज मैं कहना चाहता हूं कि पहली बार सरकार ने गन्ने का 23,000 करोड़ रुपयों का भुगतान किया है।...(व्यवधान) इनको किसान पुत्र कह रहे हैं, इनको याद नहीं है कि पहली बार श्री अमित शाह, राष्ट्रीय अध्यक्ष ने लखनऊ में विधान सभा के चुनाव के पहले संकल्प पत्र जारी करते हुए कहा कि अगर उत्तर प्रदेश में हमारी सरकार आएगी, तो हम अपनी सरकार आने के बाद पहली कैबिनेट में उत्तर प्रदेश के लघु-सीमांत किसानों का एक लाख रुपयों का कर्जा माफ करेंगे।...(व्यवधान) यह पहली सरकार है, जिसने 68 लाख किसानों का 36 हजार करोड़ रुपयों का कर्ज़ा माफ़ करने का काम किया है।...(व्यवधान) आप सोचिए कि उत्तर प्रदेश में ऐसी सरकार है।...(व्यवधान) आज पूरे देश और प्रदेश में और उससे बढ़कर आज केन्द्र सरकार ने किया कि केवल हम किसानों का कर्जा माफ करें, यह स्थायी समाधान नहीं है। आज गांव में किसान के बेटे और ऐसे परिवार हैं, त्यौहार के समय या किसी समय उनके पास कपड़े खरीदने के पैसे नहीं होते थे।...(व्यवधान) आज किसी के पास बीज का पैसा नहीं होता है, अगर उनको 6,000 रुपये मिलेगें, तो मैं समझता हूं कि इससे गांव के किसानों की जिन्दगी में एक गुणात्मक परिवर्तन आएगा।...(व्यवधान) कभी आपकी सरकार थी। हम लोग इस सदन में खड़े होकर कहते थे कि हमारी सरकार एक-एक किसान को सॉयल हेल्थ कार्ड देना चाहती है। माननीय प्रधान मंत्री जी खुद अपने भाषण में कहते थे कि अगर मनुष्य को अपने स्वास्थ्य की चिंता है, तो हमें अपनी जमीन और खेती के स्वास्थ्य की भी चिंता करनी होगी।...(व्यवधान) उसके उर्वरा की चिंता करनी होगी।...(व्यवधान) उत्तर प्रदेश में धर्मेन्द्र जी की सरकार थी, लेकिन उन्होंने सॉइल हेल्थ कार्ड बांटने का काम नहीं किया था। आज हमने 17 करोड़ सॉइल हेल्थ कार्ड बांटने का काम किया है। ये किसानों की बात करेंगे।...(व्यवधान) जिस तरह से किसानों की यूरिया खाद का ब्लैक होता था, उत्तर प्रदेश की जनता आज भी याद करती है कि यूरिया खाद के लिए लाठियां...(व्यवधान) आप क्या बात कर रहे हैं।...(व्यवधान) यूरिया ब्लैक में मिलता था। आज उस यूरिया को नीमकोटेड करने का काम हमारी सरकार ने किया है। आज देश में किसानों को कहीं भी खाद की कोई कमी नहीं है। आप सुनना सीखिए, आप धैर्य रखिए।...(व्यवधान) मैं आपकी एक-एक बात का जवाब दूंगा। आपमें धैर्य होना चाहिए।...(व्यवधान) आज पूरे देश में क्या है? किसान चाहता है कि हमें समय से यूरिया मिल जाए, हमें समय से पेस्टिसाइड मिल जाए और मिलने के बाद जब वह किसान अपना उत्पाद पैदा कर ले, तो उस उत्पाद का समर्थन मूल्य मिलना चाहिए।...(व्यवधान) आज पहली बार हम किसानों को उस राष्ट्रीय कृषि विकास नीति के अंतर्गत जहां हम उनके फसलों की कीमत को डेढ़ गुना कर रहे हैं, जहां हम सॉइल हेल्थ कार्ड बांट रहे हैं, जहां हम खाद उपलब्ध करा रहे हैं और जहां एक-एक ड्राप - मोर ड्राप, मोर क्राप,...(व्यवधान) ऐसी सिंचाई की 99 परियोजनाएं थीं, जो अधूरी पड़ी थीं, कैबिनेट ने फैसला लिया कि हम उन 99 परियोजनाओं को पूरा करेंगे।

मुझे बताते हुए खुशी है कि राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में देश में सिंचाई की 71 परियोजनाएं पूरी हो गई हैं, जिससे आज किसानों का भला हो रहा है। क्या आपको मालूम है कि आज देश में सिंचाई क्षमता कितनी हो गई है? यूपीए की सरकार में 28.9 लाख हैक्टेअर सिंचाई की क्षमता थी। देश की आजादी के बाद से वर्ष 2014 तक 28.9 लाख हैक्टेअर सिंचाई की क्षमता थी और साढ़े चार साल में हमने 35.6 लाख हैक्टेअर सिंचाई की क्षमता बढ़ाई है।

प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना की चर्चा कई बार हुई। देश के किसानों ने इसकी तारीफ की कि हमने कम प्रीमियम पर फसलों का बीमा किया। देश की आजादी के बाद इस बारे में चिंता नहीं थी, जबकि किसानों की फसलों का नुकसान हो जाता था। उसमें जब तक रिपोर्ट नहीं आ जाती थी कि पचास परसैंट फसल का नुकसान हुआ है, तब तक किसानों को फसलों की क्षतिपूर्ति नहीं मिलती थी। लेकिन प्रधान मंत्री जी ने देश के किसानों के दर्द को समझा और डिसाइड किया कि 50 परसैंट या 40 परसैंट नहीं, अगर 35 परसैंट भी नुकसान हो गया तो उसे मुआवजा मिलेगा। पहले पचास परसैंट से कम परसैंट पर किसानों को मुआवजा नहीं मिलता था। प्रधान मंत्री जी ने तय किया कि 50 नहीं, अगर 35 परसैंट तक भी किसान की फसल की क्षति होगी तो उसकी क्षतिपूर्ति देने का काम सरकार करेगी और आज सरकार यह मुआवजा देने का काम कर रही है।

इतना ही नहीं है, हमने मिनिमम सपोर्ट प्राइस नहीं दिया, बल्कि हमने उसमें 13 गुणा अधिक खरीददारी की है। मैं ये आंकड़े दे रहा हूं और ये आंकडे परिणाम हैं। दलहन और तिलहन पर सरकार की सदन की चिंता रहती थी। यहां श्री निशिकान्त दुबे, श्री महताब जी तथा अन्य बहुत सारे माननीय सदस्य बैठे हैं। सब कहते थे कि दलहन का उत्पादन कम है, तिलहन का उत्पादन कम है। आज मंत्री जी ने कृषि पर विषय रखते हुए कहा था, लेकिन साढ़े चार साल में हमने दलहन और तिलहन का उत्पादन बढ़ाया है और मिनिमम सपोर्ट प्राइस अधिक दिया है। 2009 से 2014 में हमने जो दलहन, तिलहन खरीदा था, वह 7.2 लाख मीट्रिक टन खरीदा था और जिसके दाम का भुगतान 3115 करोड़ रुपये किया था। यानी उपरोक्त वर्षों में साढ़े चार साल में 13 गुणा खरीद करके हमने 3115 करोड़ रुपये किसानों को दिये थे। इस बार साढ़े चार साल में 44,330 करोड़ रुपये किसानों के खाते में मिनिमम सपोर्ट प्राइस के गए और हमने इसे 94.47 किया है।

इसी तरह से बहुत सी बातें हैं। अभी मैं कृषि की बात कर रहा हूं, मैं कृषि यंत्र की बात नहीं कर रहा हूं। मैं कह रहा हूं कि आज जहां हमने किसानों के उत्पादन को बढ़ाने की बात कही, हमने किसान के समर्थन मूल्य की बात कही, उनकी खरीददारी को सुनिश्चित करने की बात कही और उसके बाद आज किसानों के खाते में छः-छः हजार रुपये देने की बात कही। मैं समझता हूं कि आयुष्मान भारत योजना के बाद ये लोग सवाल करते थे कि पैसा कहां से आएगा? यह जो ओबामा केयर है, उससे भी बड़ा मोदी केयर हो गया कि देश के 10 करोड़ परिवारों को देश की लगभग आधी आबादी, यानी 50 करोड़ लोगों को पांच लाख रुपये प्रति वर्ष की चिकित्सा सुविधा मिलेगी। यकीन

कीजिए, सांसद के रूप में हम लोग साल भर में 25 लोगों को ही स्वास्थ्य का अनुदान दिला सकते थे। 25 लोगों को यह अनुदान दिलाकर हम सोचते थे कि हमने अपने लोक सभा के संसदीय क्षेत्र, अपने जनपद के 25 अभावग्रस्त लोग, जो हार्ट, किडनी, लीवर, एक्सिडेंटल केस में या अन्य तरह से जो गंभीर रूप से बीमार हो गये, प्रधान मंत्री सहायता कोष से हम ऐसे 25 लोगों को अनुदान दिलाया था। कहां एक एम.पी. 25 लोगों को यह सुविधा दिलाता था। लेकिन प्रधान मंत्री जी ने कहा कि देश के बहुत सारे लोग जो पैसे के अभाव में मौत के मुंह में चले जाते हैं, अब मोदी जी की भाजपा सरकार पैसे के अभाव में किसी को मौत के मुंह में नहीं जाने देगी। केन्द्र सरकार की इस योजना को वैस्ट बंगाल में लागू नहीं कर रहे हैं। आप यहां बच्चों की तरह से नारे लगा रहे हैं, ऐसा लगता है कि ये लोक सभा में नहीं चौराहे पर खड़े हों। मैं कहना चाहता हूं कि आयुष्मान भारत योजना को लागू हुए आज सौ दिन हो गये और इन सौ दिनों में कितने लोगों को इसका लाभ मिला है। कल्याण जी को मैं बताना चाहता हूं कि 10 लाख लोगों को आयुष्मान भारत योजना के तहत सरकार के खजाने से 3 हजार करोड़ रुपये चिकित्सा के पैसे के रूप में मिल चुके हैं। यदि उन्हें यह पैसा नहीं मिलता तो शायद वे लोग जिंदगी में अपना इलाज 'एम्स' में नहीं करा सकते थे। मुम्बई के टाटा अस्पताल में कैंसर का इलाज नहीं करा सकते थे।

आज मैं कहना चाहता हूँ कि यह देश तरक्की कर रहा है। इसकी हम कोई रैंकिंग नहीं बता रहे हैं। जो पूरी दुनिया में ईज़ ऑफ बिज़नस की रैंकिंग है, पूरी दुनिया में तय करते हैं, आखिर वह सम्मान अगर नहीं मिलता तो मैं कहता हूँ कि दावोस में, जो हर दो साल में विश्व का आर्थिक सम्मेलन होता है, जहां दुनिया के तमाम बिज़नस लीडर्स, दुनिया के तमाम राष्ट्राध्यक्ष इकट्ठा होते हैं, दावोस में जो आर्थिक सम्मेलन है, अभी तक उस दावोस आर्थिक सम्मेलन का उद्घाटन कौन करते थे – अमरीका के राष्ट्रपति या यूरोप का कोई राष्ट्राध्यक्ष करता था। पहली बार दुनिया के, विश्व के आर्थिक मंच पर, अगर उद्घाटन करने का सौभाग्य मिला है, तो भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने उस दावोस के आर्थिक सम्मेलन का उद्घाटन किया है। वह सम्मान नरेन्द्र मोदी जी का नहीं था, वह सम्मान इस देश की 130 करोड़ जनता का सम्मान है। इनको नज़र नहीं आ रहा है। इनको नजर नहीं आ रहा है कि आज भारत किस तरीके से सन् 2014 में 142वें रैंक पर था। कोई निवेश नहीं कर रहा था। भारत में जो निवेश हो रहे थे, लोग उस निवेश को निकाल कर दूसरे देशों में कर रहे थे। हमारे देश के उद्योगपति – टाटा, बिड़ला, अडानी और अम्बानी आदि साऊथ अफ्रीका जा रहे थे, यूरोप जा रहे थे, यहां से पूंजी, यहां से निवेश, वहां जा रहा था। भारत में सन् 2014 में कोई अपने को सुरक्षित महसूस नहीं कर रहा था। हम 142वें स्थान पर आ गए थे। आज साढ़े चार साल में हम दुनिया के 77वें स्थान पर आ गए हैं और आज पूरी दुनिया हमारी तरफ देख रही है कि हम किस तरीके से कर रहे हैं। इसी तरीके से जो हमने काम शुरू किया, अभी आरक्षण की बात हुई, मैं कहना चाहता हूँ कि हर पार्टी अपने मैनिफेस्टो में कहती थी कि हम आरक्षण लागू करेंगे, बसपा हो, समाजवादी पार्टी हो, कांग्रेस पार्टी हो, जनता पार्टी रही हो, सब ने कहा लेकिन आखिर यह फैसला क्यों नहीं कर पाए? मैं कहता हूँ कि

आज इस देश में बिना अनुसूचित जाति, जनजाति, बिना पिछड़े वर्ग को, बिना किसी आरक्षण को कम किए हुए, सवर्ण और सामान्य वर्ग के लोगों को भी दस प्रतिशत आरक्षण देने का काम किया है। यह एक ऐतिहासिक फैसला है, इससे इनकी जमीन खिसक रही है। इनको लग रहा है कि आज चाहे वह जिस तरह से मोदी जी की सरकार ने उन सामान्य वर्ग के आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को, जिनके हाथों में हुनर रहते हुए रोज़गार नहीं था, जिनके पास काबिलियत रहते हुए नौकरियां नहीं थीं, कोचिंग नहीं कर सकते थे, पढ़ाई नहीं कर सकते थे, ऐसे लोगों को दस पर्सेंट आरक्षण दे कर बढ़ाया है और असंगठित क्षेत्र में, यह पहला राष्ट्रपति का अभिभाषण है, जिसमें इनको आइना दिखाने का काम किया है कि आज जहां हमने किसानों को आर्थिक सहायता देने का काम किया है, वहीं असंगठित क्षेत्र के दस करोड़ कामगारों को हमने तीन हजार रुपये पेंशन देने का काम किया है और सरकारी कामगारों को हमने कर में राहत देने का काम किया है। ऐसा भी कभी नहीं हुआ कि किसी सरकार ने मज़दूर को भी छुआ हो, किसान को भी छुआ हो, अनऑर्गनाइज्ड सैक्टर को भी छुआ हो और ढाई लाख से पांच लाख रुपये तक टैक्स का एग्ज़म्प्शन हुआ हो और पांच लाख रुपये तो यह पर्सनल इनकम टैक्स पर एग्ज़म्प्शन हुआ है, अगर उन्होंने हैल्थ पर किया पचास हज़ार रुपये, हाऊसिंग पर किया दो लाख रुपये, इस तरह से उनको नौ साढ़े नौ लाख रुपये हो जाएगा। मैं समझता हूँ कि पहली बार कर्मचारी हों, मज़दूर हों, सभी के लिए इस सरकार ने कुछ किया है। इनको शर्म नहीं आती है, पिछले पांच सालों में जब इनकी सरकारें थीं, जिस मंहगाई की बात करते हैं, 10.1 पर्सेंट इनफ्लेशन था, सन् 2009 से 2014 तक मंहगाई सुरसा की तरह से थी, लोगों की खरीदी नहीं हो पाती थी। सन् 2014 से 2018 तक 4.6 हुई, 2018 में आज वह मंहगाई जो डबल डिजिट रहती थी, वह 2.19 पर्सेंट पर आ गई है। पूरी दुनिया में अगर मंहगाई पर नियंत्रण किया है तो हमरी सरकार ने किया है। आज देश के गरीब आदमी की थाली में, आज देश के जो औसत परिवार हैं, उससे कम से कम उनको 30 से 40 हजार उनकी बचत हुई है। जब ये मजाक उड़ाते थे कि यह जन-धन क्या है, आज इनसे पूछिए कि ये जन-धन खाता क्या है, उस समय कहते थे कि इस जन-धन खाते में मोदी की सरकार से पैसा आएगा, तो आज वह भी दिन आ गया कि न केवल 34 करोड़ लोगों का जन-धन का खाता खुला, बल्कि उस 34 करोड़ के खातों में 88 हज़ार करोड़ रुपये, राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में कहा है कि उस जन-धन खाते में, जिसका यह विपक्ष मज़ाक उड़ाता था, 88 हज़ार करोड़ रुपये उसमें जमा हैं और अब 88 हज़ार करोड़ रुपयों के साथ-साथ उस हर जन-धन खाते में किसानों के 6000 रुपये हर साल सरकार और देगी, अपने खजाने से देगी।

मुझे लगता है कि जो जन-धन की मंशा थी, पहले दिन जब प्रधान मंत्री ने इस जन-धन के खाते खोलने का आह्वान किया और पहली बार जब लोगों ने शुरू किया तो विपक्ष कहता था कि कहाँ से पैसा आएगा।...(व्यवधान) आज यह अंतर्राष्ट्रीय एजेंसी, जिसमें आपने खुद देखा कि वर्ष 2014 से 2017 में पूरी दुनिया में जितने बैंक एकाउंट खुले हैं, केवल 55 परसेंट थे और आज हमने 55 परसेंट अकेले भारत में खाते खोले हैं।...(व्यवधान)

हमने हर डाक घर को इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक कर दिया है। प्रयागराज की बात करके मैं अपनी बात को सम-अप करना चाहता हूँ कि टोकियो की आबादी तीन करोड़ होगी। विश्व का सबसे बड़ा शहर टोकियो है।...(व्यवधान) कल मौनी अमावस्या को एक शहर में पाँच करोड़ लोग इकट्ठा हुए। पूरी दुनिया के लोग आश्चर्यचकित हैं, पूरी दुनिया का मीडिया है, विदेश के तमाम लोग आए हैं कि क्या पाँच करोड़ लोग एक जगह होली डिप गंगा, जुमना और सरस्वती के उस त्रिवेणी के संगम में एक दिन में स्नान कर सकते हैं।...(व्यवधान) हमारी महामंडलेश्वर बैठी हैं, इसी कुम्भ में साध्वी को महामंडलेश्वर की उपाधि मिली है। शायद अगर यह चमत्कार हो सकता है तो इसी भारत की धरती पर हो सकता है।...(व्यवधान) जो देव भूमि हो सकती है। आज वह गंगा हमारी लाइफलाइन है। मैं बहुत विस्तार में नहीं जाना चाहता हूँ।...(व्यवधान) मैं अपनी सरकार को बधाई दूँगा कि जिस तरीके से नमामि गंगे में उन्होंने अभी तक 25,500 करोड़ की परियोजनाएँ स्वीकृत की हैं।...(व्यवधान) मैं एक बात कहकर अपनी बात खत्म करूँगा। ये लोग कहते हैं कि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने में हमारी सरकार का संकल्प क्या है। हमारी सरकार का संकल्प भ्रष्टाचार के खिलाफ यह है कि आज ही लंदन में वहाँ के मिनिस्टर ने क्लियर किया है कि जो विजय माल्या भाग गया था, उसको हमारी सरकार फिर वापस लाएगी और यहाँ कोर्ट ऑफ लॉ में ट्रायल करके उनको सज़ा मिलेगी।...(व्यवधान) मैं कहता हूँ कि, गृह मंत्री जी बैठे हैं, हम 16 लोगों को वापस लाने की कार्रवाई कर रहे हैं, यूएई से, यूके से, बेल्जियम से, इजिप्ट से, यूएसए से, अर्जेंटीना से और बरमूडा से।...(व्यवधान) 58 लोगों के खिलाफ जो इकोनॉमिक ऑफेंडर्स हैं, उनको लुक आउट सर्कुलर जारी हुआ है। अब इनको दर्द क्यों है, यह सदन क्यों नहीं चलने देते हैं, इसलिए नहीं चलने देते हैं कि अब जब क्रिश्चियन मिशेल इस देश में आ चुका है, राज़ खोल रहा है, आने वाले दिनों में बड़े-बड़े लोग बेनकाब हो जाएँगे और कुछ लोग जब जेलों में जाएँगे तो उसी की चिंता है, उसी का दर्द है। ...(व्यवधान) राजीव सक्सेना और संजीव चावला दो लोग और एक्सट्राडाइट हो रहे हैं। पाँच सालों में कभी किसी भगोड़े को वापस ले आने का काम किया था।...(व्यवधान) आज हमारी सरकार ने किया है। इसलिए मैं कहना चाहता हूँ, आपने समय दिया, लेकिन मैं एक बात कह सकता हूँ कि आज यह महामहिम राष्ट्रपति का जो अभिभाषण है, यह अभिभाषण कोई भविष्य के लिए नहीं है। मैं आज यह कह सकता हूँ कि हमारी सरकार ने आत्मविश्वास के साथ जो वायदा वर्ष 2014 में किया था, चाहे किसान हो, गरीब हो, नौजवान हो, मजदूर हो, महिलाएँ हों, आज उन सब के लिए स्पष्ट तौर से योजना बनाकर लाई है।...(व्यवधान) चाहे प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि हो, चाहे स्वास्थ्य के क्षेत्र में आयुष्मान भारत हो, आरोग्य योजना हो, चाहे चूल्हे के मामले में हमारी उज्ज्वला योजना हो, प्रधान मंत्री आवास योजना हो, स्वच्छता में शौचालय हो।...(व्यवधान) हमारी इन तमाम योजनाओं ने आज इस देश में उस गरीबी को कम किया है, जो इस देश के माथे पर गरीबी का कलंक था, उसको पोंछने का काम करके एक नए भारत, समय की कमी है, मैं उस नए भारत को डिफाइन नहीं कर सकता, लेकिन एक ऐसा नया भारत जहाँ सब को न्याय मिले, बराबरी का हक मिले, समता का

अधिकार मिले, सब को सुरक्षा मिले ।...(व्यवधान) आज उस सुरक्षा का काम हमारी सरकार कर रही है। मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ :

> "कि राष्ट्रपति की सेवा में निम्नलिखित शब्दों में एक समावेदन प्रस्तुत किया जाए-
>
> 'कि इस सत्र में समवेत लोक सभा के सदस्य राष्ट्रपति के उस अभिभाषण के लिए, जो उन्होंने 31 जनवरी, 2019 को एक साथ समवेत संसद की दोनों सभाओं के समक्ष देने की कृपा की है, उनके अत्यंत आभारी हैं।"